श्री दत्त मेघे (महाराष्ट्र : मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

डा. फागुनी राम (बिहार) : मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

प्रो.एम.एम. अग्रवाल (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

Concern over increasing price of steel in the country

† **श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश)** : उपसभापति महोदय, स्टील की बढती कीमतों ने लाखों लोगों को, जो इस उद्योग से जुड़े हुए हैं और उनके परिवारों को भुखमरी और आत्महत्या के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। पिछले 3 सालों में स्टील की कीमतों में भारी वृद्धि हुई है। वर्ष 2004-05 के बजट में इन लोगों को यह आशा थी कि सेकेन्ड्री स्टील की कस्टम डयूटी में कटौती की जाएगी जिससे छोटे कारखाने, जो सेकेन्ड्री स्टील से रोजमर्रा की वस्तुएं साईकिल और खेती-बाड़ी की चीजें बनाते हैं, उन्हें राहत मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कस्टम डयूटी को 20 प्रतिशत की रहने दिया गया और सेन्ट्रल-एक्साईज डयूटी 4 प्रतिशत से बढाकर 16 प्रतिशत, और फिर 20 प्रतिशत कर दी गई, जब कि प्राईम स्टील पर डयूटी 5 प्रतिशत ही है। जिसका लाभ बड़े कारखानों को मिलता है। सरकार ने प्राईम स्टील पर डयूटी 40 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत इसलिए की थी कि स्टील की कीमट स्थिर रहे और घरेलू कारखानों को लोहा-इस्पात वाजिब दामों पर मिले, लेकिन यह बड़े स्टील प्लांट अपने उत्पादन का 90 प्रतिशत एक्सपोर्ट कर देते हैं और घरेलू कारखानों को बचा-खुचा माल ही मिलता है, जिसके कारण छोटे उद्योगो के पास माल की कमी हो जाती है और उत्पादन नहीं हो पाता है। इसके कारण मंहगाई और बेरोजगारी के साथ-साथ, छोटे और घरेलू उद्योगों को भी वाजिब दाम में स्टील मुहैया कराये और सेकेन्ड्री-स्टील की कस्टम डयूटी को 20 प्रतिशत से घटाकर प्राईम-स्टील की कस्टम डयूटी के बराबर किया जाए। स्टील की कीमतों को रोज समाचारपत्रों में प्रकाशित किया जाना चाहिए, जिससे स्टील की कालाबाजारी को रोका जा सके। इससे बड़े लोगों के साथ, गरीब भी खुश रहेंगे।

شری ابو عاصم اعظمی " اتر پر دیش": آپ سبھا پتی مہودے، اسٹیل کی بڑھتی قیمتوں نے لا کھوں لوگوں کو، جو اس ادھیوگ سے جڑے ہوئے ہیں، اور ان کے پریواروں کو بھوکمری اور خودکشی کے کگار پر لا کر کھڑا کر دیا ہئے۔ پچھلے۳سلوں میں اسٹیل کی قیمتوں میں بھاری بڑھوتری ہوئی ہے۔ سال 05 -2004 کے بجٹ میں ان لوں گوں کو یہ آشاتھی کہ سیکنڑری اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی میں کٹوتی کی جائےگی،- جس سے چھوٹے کارخانے جو

†Transliteration of Urdu Script.

سیکنڑری اسٹیل سے روز مرہ کی چیزوں ، سائیکل اور کھیتی باڑی کی چیزیں بناتے ہیں انہیں راحت ملےگی، لیکن ایسا نہیں ہوا۔ کسٹم ڈیوٹی کو ۲۰ فیصدہی رہنے دیا گیا اور سینٹرل ایکسائزڈیوٹی 4 فیصد سے بڑھا کر ۱۶ فیصد،اور پھر ۲۰فیصد کرری گئی،جبکہ پرائم اسٹیل پر ڈیوٹی۵ فیصدی ہے، جس کا فائدہ بڑے کارخانوں کوملتا ہے۔ سرکار نے پرائم اسٹیل پر ڈیوٹی 40 فیصد سے گھٹا کر ۵ فیصد اس لئے کی تھی اسٹیل کی قیمت استھر رہے اورگھریلوں کارخانوں کو لوہا اسپات واجب داموں پر ملے، لیکن یہ بڑے اسٹیل پلانٹ اپنے اتپادن کا۹۰ فیصد ایکسپورٹ کر دیتے ہیں، اور گھریلوں کارخانوں کو بچا کھچامال ہی ملتا ہے، جسکی وجہ سے چھوٹے ادھیوگوں کے پاس مال کی کمی ہو جاتی ہے اور اتپادن نہیں ہو پاتا ہے-اس کی وجہ سے مہنگائی اوربے روزگاری کے ساتھ ساتھ اپرادھ بھی بڑھ رہے ہیں۔ میری سرکار سے مانگ ہے کہ وہ بڑے اسٹیل ادھیوگوں کے ساتھ ساتھ چھوٹے اور گھریلو ادھیوں گوں کو بھی واجب دام میں اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی کو ۲۰ فیصد سے گھٹا کر پرائم اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی کے برابر کیا جائے- اسٹیل کی قیمتوں کو روز سماچار پتروں میں پرکاشت کیا جانا چاہئے، جس سے اسٹیل کی کالابزاری کو روکا جا سکے۔ اس سے بڑے لوگوں کے ساتھ ،غریب بھی خوش رہیںگے۔

"ختم شر"

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : मैं अपने आप को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री कमाल अख्तर (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : मैं, अपने को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

Concern over the miserable conditions of the weavers in the Country

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, देश के बुनकरों की दशा आज सरकार की उपेक्षा के कारण काफी दयनीय हो गई है। कई क्षेत्रों में बुनकरों ने अपनी दयनीय हालत के कारण आत्महत्या करनी शुरू कर दी है, क्योंकि बुनकर व्यवसाय से वे अपना परिवार का लालन-पालन करने में असमर्थ हैं। उन्हें कच्चा माल उचित मूल्य पर नहीं मिल पा रहा है। चीन से सिल्क के कपड़े और सिल्क का कच्चा माल, तस्करी के द्वारा भारतीय बाजार में बिक रहा है। इन बुनकरों को सरकार की ओर से ईमानदारी से राज्य सहायता एंव अन्य सहायता भी नहीं मिल पा रही है। सरकार ने बुनकरों के लिए हालांकि कई योजनाएं शुरु की हैं, परन्तु ये योजनाएं केवल सरकारी कागजों में पूरी हो रही हैं, बुनकरों को इससे कोई विशेष फायदा नहीं हो रहा है। एक जमाने में इन बुनकरों के माध्यम से उत्पादित कपड़ा पूरे विश्व में प्रसिद्ध था और एक अगूंठी में से कई मीटर कपड़ा पार हो जाता था। दुनिया में इनके द्वारा उत्पादित कपड़े की काफी मांग है, फिर भी सरकार बुनकरों की दशा सुधारने के लिए ठीक ढंग